'सेवा समागम' द्वारा श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के 350वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर आयोजित होनेवाले सेवा शिविरों के उदघाट्न कार्यक्रम में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–01.01.2017, समय–अप॰ 03:00 बजे, स्थान–पटना सिटी)

'सेवा–समागम' द्वारा श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के ''350वें प्रकाश–उत्सव'' के उपलक्ष्य में आयोजित होनेवाले सेवा–शिविरों के उद्घाटन– समारोह के अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित बिहार के पूर्व मंत्री श्री नन्द किशोर यादव जी, बाबा महेन्द्र सिंह जी, बाबा इकबाल सिंह जी, श्री गुरूचरण सिंह गिल जी, श्री अविनाश जायसवाल जी, डॉ॰ एस॰ए॰ कृष्णा जी, प्रकाश–उत्सव में बिहार पधारे श्रद्धालुगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

'सेवा–समागम' द्वारा श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें प्रकाश–उत्सव' के उपलक्ष्य में आयोजित होनेवाले सेवा–शिविरों के उद्घाटन– समारोह के अवसर पर मैं समस्त श्रद्धालुओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। दसमेश गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज की पावन जन्मभूमि बिहार की वसुधा पर मैं पूरी दुनियाँ से पहुँचनेवाले सभी सिक्ख धर्मावलम्बी भाइयों–बहनों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूँ। गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के जीवन–चरित्र पर जब हम अपनी नजर दौड़ाते हैं, तो पाते हैं कि उनका समस्त व्यक्तित्व और कृतित्व संघर्ष, त्याग, बलिदान और मानवता की सेवा की अनूठी गाथा है। उनकी जीवन–गाथा में एक ओर अगर धर्म, संस्कृति और स्वदेश की रक्षा के लिए पूरे परिवार को न्योछावर करने के दुर्लभतम दृष्टान्त हैं और विदेशी आक्रमण–कारियों के भय से त्रस्त समाज को जगाने वाली प्रबल हुँकार है, तो दूसरी ओर पूरी मानवता, विशेषतः अभिवंचित वर्गों के प्रति ममत्व–परक आत्मीयता भी है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भारतीय समाज को एक नई दिशा और दृष्टि प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। परिणाम–स्वरूप, तत्कालीन समाज में चेतना की एक नई धारा का प्रवाह हुआ, जिसने लोगों के जीवन में सांस्कृतिक जागृति लाकर परस्पर जुड़ाव के रंग भर दिये। उन्होंने अपने शिष्यों में यह विश्वास जगाया कि तुम्हारा जन्म ईश्वरीय प्रयोजन की सिद्धि के लिए ही हुआ है और इस प्रयोजन के बारे में उन्होंने दो बातें बतायीं। पहला प्रयोजन उन्होंने आत्म–रक्षा का बताया और दूसरा आत्म–स्वतंत्रता का। गुरूजी के जीवन–चरित्र में हमें वीरता और धीरता के साथ–साथ, विद्या और विनम्रता के भी दर्शन होते हैं। गुरूजी शस्त्र और शास्त्र–दोनों को पूरी निपुणता के साथ साधने वाले अप्रतिम योद्धा और विद्वान महानायक थे। गुरूजी का मन सबके लिए समान भाव से खुला रहता था। युद्ध–भूमि में उन्होंने कन्हैया को आदेश दिया कि चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान, मित्र हो या शत्रु, सबको जल पिलाओ। गुरूजी के हृदय की उदारता उस समय चरम पर दिखती है, जब भाई दया सिंह ने चमकौर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए गुरू–पुत्रों अजीत सिंह और जुझार सिंह को, चादर से ढ़ँकने की आज्ञा माँगी, तब गुरूजी ने आदेश दिया कि इनको तभी ढ़ँकना, जब अन्य सभी हुतात्मा वीरों को पहले ढ़ँक दिया जाये। ऐसी दिव्य वीरता और विशाल–हृदयता भारतीय इतिहास में कहीं अन्यत्र नहीं मिलती।

गुरूजी के संदेश ही आज भी सिक्ख– समुदाय के मूल–मंत्र बने हुए हैं। आज 'खालसा पंथ' ने पूरे विश्व में जाति, समाज और रंगभेद से ऊपर उठकर अत्याचार एवं आतंक के खिलाफ आवाज बुलंद किया है तथा असहायों को प्रर्याप्त सहायता पहुँचाई है।

गुरूजी एक अनूठे कवि भी थे। उनके द्वारा रचित कई कविताएँ आज भी भारतीय समाज को प्रेरित करती हैं। गुरू गोबिन्द सिंह जी के

पदों में भक्ति और मुक्ति के ऐसे सुमार्ग बताये गये हैं, जिनका अनुसरण कर मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है। उन्होंने कहा है कि–

''अलप अहार सुलाप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति।

सील,संतोख सदा निरबाहिबो, ह्वैबो त्रिगुण अतीति।।

काम,क्रोध, हंकार, लोभ, हठ, मोह न मन सो ल्यावै।

तब ही आतम तत को दरसे, परम पुरख कह पावै।।''

–अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, हठ, मोह, अहंकार आदि से विरत रहते हुए, प्रेम और भाईचारा के मार्ग पर चलकर परमात्म तत्व प्राप्त करने की गुरू गोविन्द सिंह की शिक्षा, भौतिकवाद से त्रस्त आधुनिक मानव–जाति के लिए अनुपम वरदान है।

गुरू गोबिन्द सिंह जी ने जाति–व्यवस्था की अनेकता को मिटाकर समतामूलक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया था। उन्होंने तो साफ–साफ कहा था –

''दे इरा मसीत सोई, पूजा और नमाज ओई,

मानस सब एक है, अनेक को भ्रमाउ है।

एकै नैन, एकै कान, एकै देह, एकै बान,

खाक बाद आतश औ आब को रलाउ है।

अल्लाह, अमेष सोई, पुराना औ कुरान ओई

एक ही सरूप सबै, एक ही बदाउ है।''

संत–कर्म और वीर–कर्म तथा भक्ति और वीरता का ऐसा अद्‌भुत मेल अन्यत्र दुर्लभ है। राष्ट्र को देने के लिए अपना सब कुछ खो देना तो केवल वे ही जानते थे। वे लड़ रहे थे पंजाब में, पर राह दिखा रहे थे पूरे देश को। यह बिहार का सौभाग्य है कि गुरूजी ने बिहार की धरती पर अवतार लिया। आज उनके '350वें प्रकाश पर्व' के सुअवसर पर, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार तथा तख्त श्री हरमंदिर साहिब जी, पटना साहिब की प्रबंधक समिति आदि संगठनों ने बिहार पहुँचने वाले सभी सिक्ख धर्मावलम्बियों के आतिथ्य के लिए काफी शानदार और बेहतरीन व्यवस्था की है। माननीय मुख्यमंत्री जी एवं स्वयं मैंने भी राजभवन में संयुक्त रूप से बैठक कर संबंधित विभागों को आवश्यक तैयारियों के निदेश दिये थे। अधिकारियों ने अच्छा काम किया है। साथ ही स्वयंसेवी संगठनों ने भी इस अवसर पर बेहतर ढ़ग से प्रशासन को अपना सहयोग प्रदान किया है। 'सेवा–समागम' संस्था द्वारा भी पटना साहिब क्षेत्र में लगभग आधे दर्जन बड़े एवं दो दर्जन से अधिक लघु सेवा–शिविर खोले गये हैं, ऐसा आयोजकों ने मुझे बताया है। आदरपूर्वक आतिथ्य का संस्कार तो बिहारवासियों के रग–रग में बसता है। मैं समझता हूँ, 'सेवा–समागम' सहित अन्य संस्थाएँ भी पावन 'प्रकाश–उत्सव' के अवसर पर सरकार के साथ तालमेल बिठाते हुए भरपूर सहयोग करेंगी। मैं पुनः एक बार फिर सेवा–शिविरों के संचालन के लिए आप सबको बधाई देता हूँ और सभी पटनावासियों और कार्यकत्ताओं से अनुरोध करता हूँ कि आप 'प्रकाश–उत्सव' के सुअवसर पर सेवा, सत्कार, सौजन्य और सहयोग की ऐसी मिशाल पेश करें, ताकि बिहार की अनूठी छाप लेकर यहाँ आने वाले सभी श्रद्धालुगण प्रसन्नचित्त विदा हों। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।